E-CONTENT

Subject : Economics
Class : B.A Part I (Paper II)
Topic : Keynsian Theory of Investment
कीन्स का विनियोग / निवेश - फलन सिद्धान्त

By:
EKATA KUMARI
Guest Faculty
(Assistant Proffesor)
Mahila College Sasaram;
Rohtas
Email I'd:
bhardwajekata@gmail.com

केन्स के निवेश-फलन सिद्धांत की व्याख्या कीजिए ?

निवेश का अर्थ :-

आम तौर पर जब कोई व्यक्ति कम्पनियों के शेयर अथवा बाँड खरीदना है या सरकार की प्रतिभूतियों में अपना रुपया लगाता है तो कहा जाता है कि वह अपने रुपये का निवेश करता है, परन्तु यह वास्तविक निवेश नहीं है। इसे तो वित्तीय निवेश कहते हैं। सामान्यतः जब एक व्यक्ति शेयर खरीदता है और कोई दूसरा उसे बेचता है, तो इसके परिणामस्वरूप देश की वास्तविक पूंजी में कोई वृद्धि नहीं होती। अर्थशास्त्र में इसलिए वास्तविक निवेश उसे कहते हैं जिससे वास्तविक पूंजी में वृद्धि हो। अर्थात् अर्थशास्त्र में निवेश का अर्थ होता है पूंजीगत पदार्थों जैसा कि मशीनें, उपकरण, औजार, निर्माण कार्य जैसे कि मकान, दुकान और फैक्ट्रियों की इमारतें आदि तथा सार्वजनिक निर्माण कार्य जैसे कि नहरें, सड़कें, पुल और बाँधों में वृद्धि को ही अर्थशास्त्र में निवेश कहा जाता है। इस सभी प्रकार की पूंजी से आगे चलकर देश के उत्पादन में वृद्धि होती है।

एक और दृष्टि से निवेश दो प्रकार का होता है :

(i) स्वतंत्र निवेश
(ii) प्रेरित निवेश

(i) स्वतंत्र निवेश :-

स्वतंत्र निवेश से अभिप्राय उस निवेश से है जो आय में कमी और वृद्धि के फलस्वरूप घटता-बढ़ता है अर्थात् वह आय से स्वतंत्र होता है।

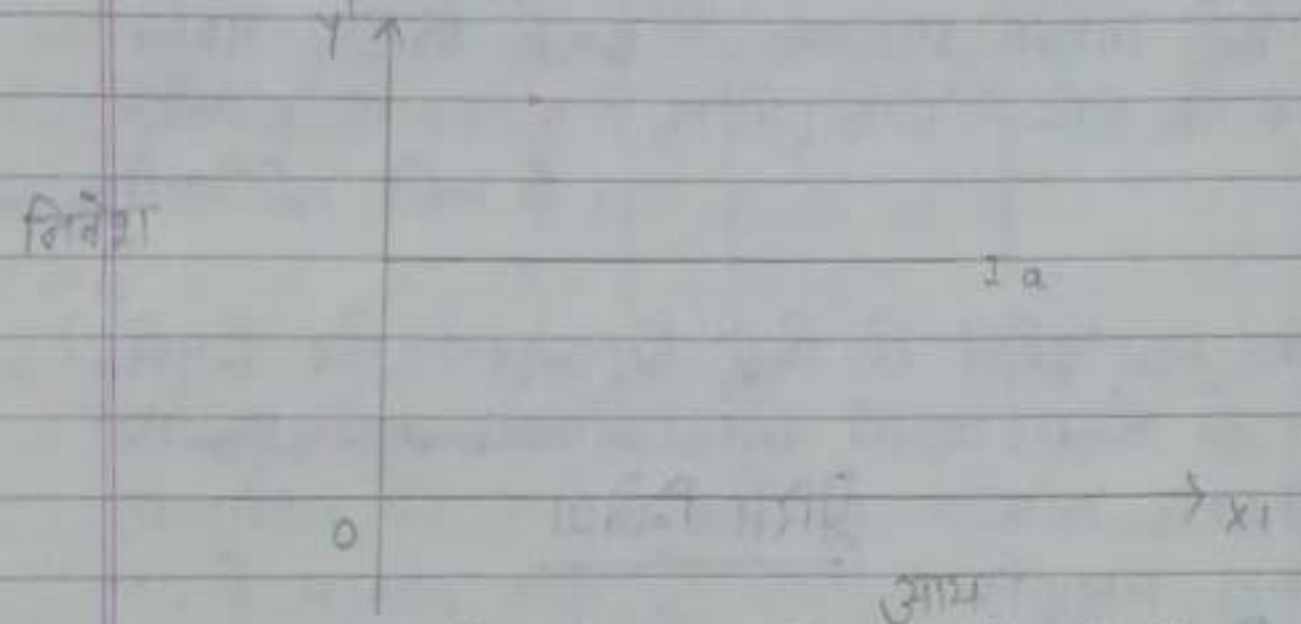

स्वतंत्र निवेश जो आय के स्तर में परिवर्तन से प्रभावित नहीं होता

(ii) प्रेरित निवेश :-

स्वतंत्र निवेश के विपरीत प्रेरित निवेश राष्ट्रीय आय में वृद्धि के साथ बढ़ता है तथा उसकी कमी के साथ घटता है अर्थात् प्रेरित निवेश आय

के स्तर में परिवर्तन द्वारा निर्धारित होता है अतः प्रेरित निवेश आय - सापेक्ष होता है जैसा कि नीचे चित्र में प्रदर्शित है।

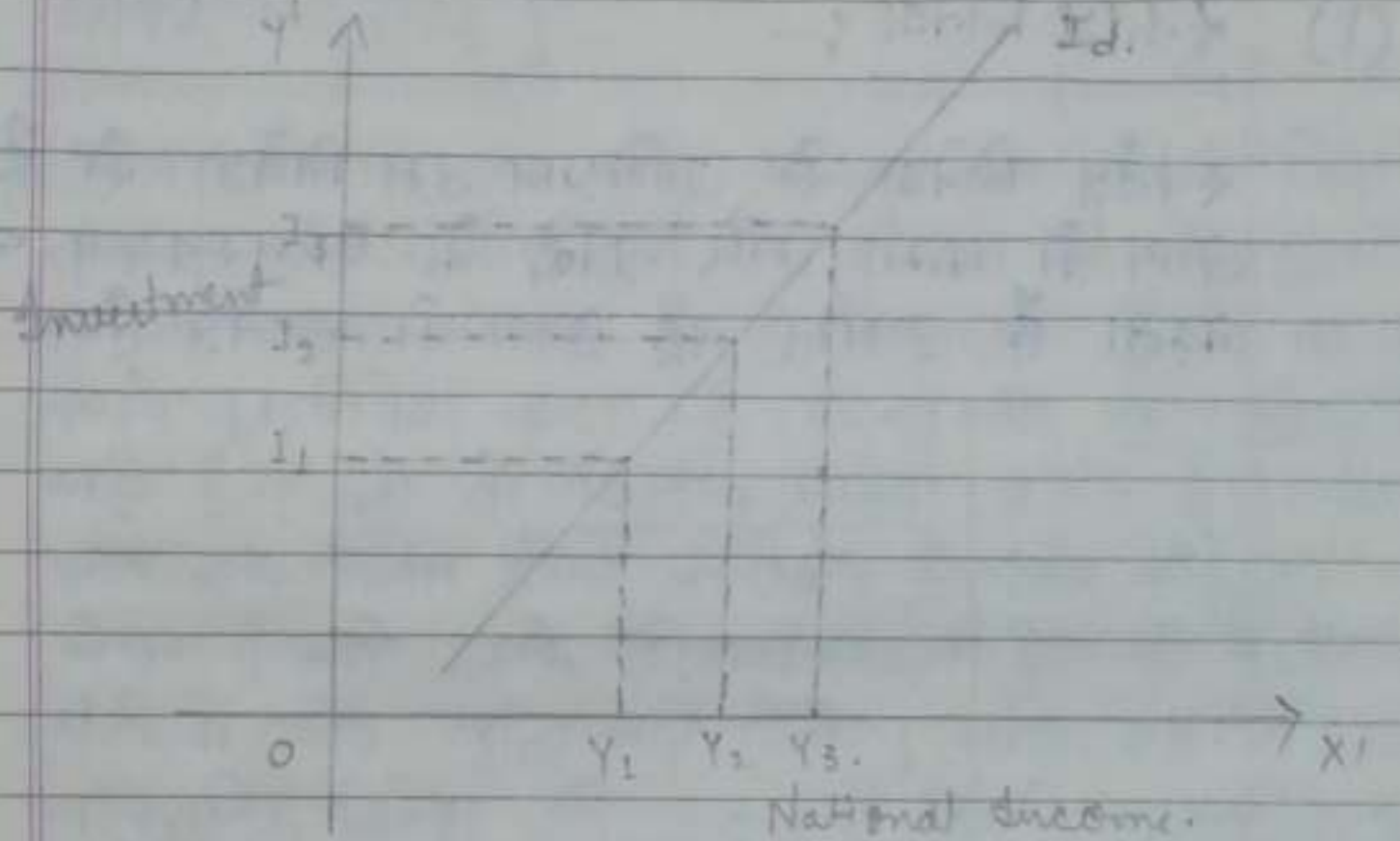

प्रेरित निवेश

केन्ज का निवेश ~~स्थान~~ सिद्धांत :-

निवेश - प्रेरणा मुख्य रूप से दो तत्वों पर निर्भर है : (i) पूंजी की सीमांत उत्पादकता (ii) ब्याज की दर। यह बात सरलता से समझी जा सकती है कि निवेश की प्रेरणा लाभ की प्रत्याशित दर तथा ब्याज की दर पर निर्भर करती है। यदि किसी व्यक्ति के पास बचा हुआ कुछ रुपया है तो उसके दो वैकल्पिक

उपयोग है। एक तो यह है कि वह उस रुपये को किसी मशीनरी अथवा फैक्टरी आदि में निवेश करे और दूसरा विकल्प यह है कि वह उसे ब्याज पर दूसरों को उधार दे दे। यदि मशीनरी अथवा फैक्टरी आदि में निवेश करने से उसे अपने रुपए से 12 प्रतिशत लाभ होने की आशा है जबकि उसे उधार देने से 8 प्रतिशत के बराबर ब्याज प्राप्त होता है तो स्पष्ट है कि वह रुपया मशीनरी और फैक्टरी में निवेश करेगा। अतः केन्ज के अनुसार निवेश पूंजी की सीमांत उत्पादकता (MEC) तथा ब्याज की दर द्वारा निर्धारित होता है।

किसी भी प्रकार की पूंजी में निवेश तब तक किया जाएगा जब तक कि उसमें निवेश करने से लाभ की प्रत्याशित दर अर्थात पूंजी की सीमांत उत्पादकता ब्याज दर के समान नहीं हो जाती। संतुलन तब होता है जब कि वह इतनी मात्रा में किसी दिशा में निवेश करता है जिससे लाभ की प्रत्याशित दर (MEC) घट कर ब्याज की दर के समान हो जाती है। निवेश प्रेरणा के निर्धारक दो तत्वों के विषय में एक उल्लेखनीय बात यह है कि ब्याज की दर की तुलना में पूंजी की सीमांत उत्पादकता का निवेश निर्धारण करने में अधिक महत्तवपूर्ण स्थान है। इसका कारण यह है कि ब्याज दर में इतने परिवर्तन नहीं होते, ब्याज दर तो लगभग स्थिर ही रहती है।

केन्ज के अनुसार ब्याज की दर मुद्रा की पूर्ति तथा नकदी अधिमान द्वारा निर्धारित रहती है। नकदी अधिमान जितना अधिक होगा, ब्याज की दर उतनी ही ऊँची होगी। नकदी अधिमान तथा आय दी हुई होने पर, मुद्रा की पूर्ति जितनी ही अधिक होगी ब्याज की दर उतनी ही कम होगी।

पूंजी की सीमांत उत्पादकता (MEC) का अभिप्राय किसी पूंजी पदार्थ में निवेश करने से प्रत्याशित लाभ की दर से है। किसी पूंजी पदार्थ की एक अतिरिक्त इकाई में निवेश करने से जो लाभ की दर प्राप्त होने की आशा होती है, उसे उस पूंजी की इकाई की सीमांत उत्पादकता (MEC) कहते हैं। पूंजी की पूर्ति कीमत और संभांवित आय पूंजी की सीमांत उत्पादकता से तत्व हैं।

पूंजी की पूर्ति कीमत तथा उसकी भावी संभावित आय की सहायता से हम पूंजी की सीमांत उत्पादकता ज्ञात कर सकते हैं। पूंजी की पूर्ति कीमत तथा भावी संभावित आय के अंतर से लाभ की प्रत्याशित दर अथवा पूंजी की सीमांत उत्पादकता मापी जा सकती है। केन्ज के अनुसार "पूंजी की सीमांत उत्पादकता मितिकाता या बट्टे की वह दर है जो किसी पूंजी परिसम्पत्ति के संपूर्ण

जीवन-काल की वार्षिक प्रत्याशित आयों के वर्तमान मूल्यों को उस मशीन की पूर्ति कीमत के बराबर कर देती है।" पूंजी की सीमांत उत्पादकता (MEC) को निम्नलिखित सूत्र द्वारा मापा जा सकता है :—

पूर्ति कीमत (Supply price)
= मितिकाता की हुई भावी संभावित आयें
= Discounted prospective yield.

'अथवा'

$$C = \frac{R_1}{1+r} + \frac{R_2}{(1+r)^2} + \frac{R_3}{(1+r)^3} \cdots\cdots + \frac{R_n}{(1+r)^n}.$$

यहाँ,

C = पूर्ति कीमत।

$R_1, R_2, R_3, \cdots R_n$ = संभावित आय।

r = मितिकाता की उस दर से है जो प्रति वर्ष होने वाली आयों को पूर्ति कीमत के बराबर कर देती है

अर्थात्

r = पूंजी से प्राप्त होने वाली प्रत्याशित लाभ की दर अथवा पूंजी की सीमांत उत्पादकता है।

कीन्स ने कहा है कि (Investment) निवेश और (Rate of Interest) ब्याज की दर में उलटा संबंध है। जैसा कि नीचे दिखाया गया है :-

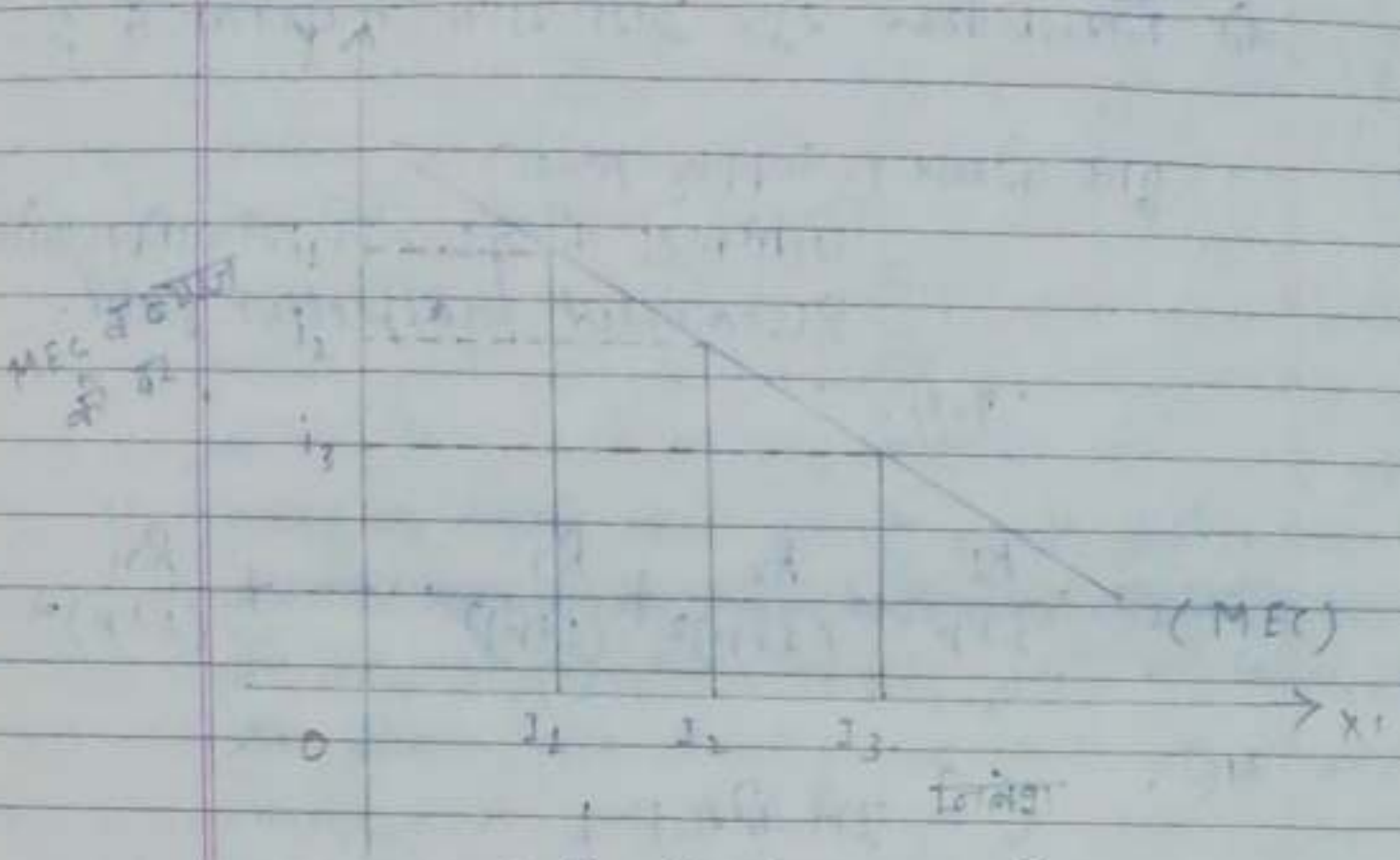

अब हम किसी दी हुई ब्याज की दर पर यह ज्ञात कर सकते हैं कि अर्थव्यवस्था में निवेश की किस मात्रा पर संतुलन होगा। उसके पहले MEC वक्र बायें से दायीं ओर नीचे की ढाल वाला होता है। इसका कारण है कि निवेश के बढ़ने पर पूंजी की सीमांत उत्पादकता घटती है।

ऐसा हम पूंजी की सीमांत आय उत्पादकता की रेखा चित्र में Y अक्ष पर सीमांत आय उत्पादकता के साथ ब्याज दर को भी व्यक्त करके जान

सकते हैं।
निवेश को दिखाया गया है। अर्थव्यवस्था में X अक्ष पर
संतुलन उस समय स्थापित होता है जब इतना
निवेश किया जाएगा कि पूंजी की सीमांत उत्पादकता
ब्याज की दर के बराबर हो जाए। जैसा कि ऊपर
चित्र में दिखाया गया है।